International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 03-05-2020; Accepted: 16-05-2020; Published: 07-05-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 27-29

मर्द वाद का दौर दूर नहीं

Manu
Professor, See Sankaracharya University, Kalady, Kerala, India

प्रस्तावना

समाज को पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ाने में नर और और नारी की जो देन है, वह खूब कीमती चीज़ है, यानी बच्चों की पैदायशी की बात। 'शादी की संस्था' सब से बड़ी सामाजिक क्रांति है । सब से बड़ा सोच विचार है । नर नारी का यह पारिवारिक जुड़ाव ही समाज की बुनियाद है। फिर भी इसी संस्था में जन्मपत्री के आधार पर, सामाजिक बराबरी के नाम पर, तालीम व संस्कृति के नाम पर, मेल खाने वाले नर नारी के दाखिला हो जाने पर दोनों के बीच में झगड़ा पैदा होता है और रार बढ़ती जाती है, तनाव उत्पन्न हो जाता है, रिश्तों के बीच दबाव आ जाता है, परिवार में दरारें पैदा हो जाती हैं, रिश्तों में पहले टूटन आ जाता है, आखिर वह तलाक़ तक पहुँच जाता है, रिश्ता टूट जाता है, संस्था गुमसुम हो जाता है। रिश्ते को कायम रखने के लिए अदालत भी कमज़ोर व बेक़ामयाब हो जाता है। जख्में दोनों तरफ़ पड़ जाती हैं, मगर पुरुष वर्चस्व समाज में नारी का जीना अगर उसके पास अर्थ नहीं है तो दूभर हो जाएगा।

हर युग में यह हुआ है, अब भी होता आ रहा है। इस पर रोकथाम लगाने के लिए नारी को ही संघर्ष करना पड़ता है। इसलिए आज नारी का जीवन संघर्षमय है। भिन्न-भिन्न युगों में नारी की स्थिति उस समय के वक्त की परिस्थितियों एवं परिवेशों की उपज है। प्राचीन युग से लेकर आधुनिक युग तक नारी की स्थिति में कई तरह के उतार-चढ़ाव आए हैं। समाज ने नारी पर अनेक बंधन लगाए थे। आज इन बंधनों को तोड़ने के लिए वह संघर्ष कर रही है। साहित्य में इस संघर्ष को नारी मुक्ति आंदोलन या नारी मुक्ति संघर्ष कहते हैं।

नर और नारी सारे मानवीय सौंदर्य एवं चेतना की चीज़ें हैं। नारी सृष्टि का मूल है। सृष्टि की शुरुआत से लेकर सृष्टि के निर्माण और संचालन में नारी की जो भूमिका है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है । औरत ने इंसानियत की तहज़ीब व सफ़ाक़त की तरक़्क़ी में हर वक़्त अपना योगदान भी दिया है।

नारी जननी है, शक्ति है, त्याग की मूर्ति है, दया का सागर है, अपने पति और बच्चों के लिए तपस्या करनेवाली तापसी है, वह मां हैं। बावर्ची खाने में पसीने बहा कर वह खाना पकाती है और खाना पति और घर के और लोगों को खिलाकर बाद में खाने वाली मासूम निस्वार्थ नारी है। "नारी में त्याग एवं उदारता है, इसलिए वह देवी है। परिवार केलिए तपस्या करती है इसलिए उसमें तापसी है। उसमें ममता है इसलिए मां है। क्षमता है इसलिए शक्ति है। किसी को किसी प्रकार की कमी होने नहीं देती इसलिए अन्नपूर्ण है । " (1) लेकिन राम अहूजा के अनुसार " प्राचीन भारत में स्त्रियों की स्थिति से संबंधित दो संप्रदाय मिलते हैं। एक संप्रदाय का कहना है कि स्त्रियाँ पुरुष के बराबर थीं, जबकि दूसरे संप्रदाय की मान्यता है कि स्त्रियों का न केवल अपमान ही होता था बल्कि उसके प्रति घृणा भी की जाती थी।" (2) इन्हीं रायों से पता चलता है कि औरतों का स्थान समाज में कभी भी मर्द के आगे ना था।

जीवन संघर्ष है, जिद्दो ज़हद है, चुनौती है, जिजीविषा है, लालसा है, उम्मीद है, आस है निराश है, स्वर्ग है, नरक है, वैसे कुछ भी हो सकता है। मगर जीवन का मतलब अपने जीनेवाले समाज के माहौल में हर आदमी की परिस्थितियों से निकलेगा। अमन हरेक की जिंदगी का मकसद है और उसे पाने के लिए नर और नारी को एक साथ काम करना है। नारी के दमन करने से क्या मर्द अपनी जिंदगी में अमन पा सकता है ? कभी नहीं। क्या नारी मर्द के ख़िलाफ़ लड़कर अपने लिए अमर अमन पा सकती है? कभी नहीं। इसलिए ही नर और नारी ज़िन्दगी के प्यारे दुश्मन बन सकते हैं।

पलायन से कभी ऊर्जा नहीं मिल जाएगी। लेकिन जब हम जीवन को संघर्ष मानकर आगे बढ़ेंगे तो हमें ऊर्जा मिल जाएगी। वह ऊर्जा जिंदगी में सिमत और हालत पहचानने में मदद करेगी। पर उच्च तबके की औरत खुद को सीमित करने की कोशिश ही कर रही थी।." ब्राह्मणों ने रक्त की शुद्धता, स्त्री सतीत्व की रक्षा और हिंदु धर्म की रक्षा के नाम पर उसे इतने अधिक सामाजिक बंधनों से जकड़ दिया कि उसके स्वतंत्र अस्तित्व का नामो निशान न रहा। " (3)

मानवीय समाज का इतिहास नारी को अधिकार से, सत्ता से, अर्थ एवं शक्ति से दूर रखते हुए नज़र आता है । उसे जीना है तो किसी के साए में जीना है । आत्मनिर्भरता की बात कहीं भी, कभी भी उठती ही नहीं। परिवार की सब बात नर ही तय करेगा। डॉ. सुशील माधव पाठक के अनुसार " इतिहास पिछली पीढ़ियों द्वारा अर्जित संपत्ति, ज्ञान और बुद्धिमत्ता को हमें देता है तथा हमारा उत्तरदान अपनी पीढ़ियों तक ले जाता है। भूत के अध्ययन के बिना वर्तमान को समझना कठिन है। घटनाओं के क्रम में और विचारधाराओं में परिवर्तन अचानक नहीं धीरे धीरे होते हैं। इसलिए भूतकाल की घटनाओं एवं प्रवृत्तियों का अध्ययन हमें वर्तमान और भविष्य को समझने में मदद करता है। " (4) स्त्री पुरुष के बीच का संघर्ष वैयक्तिक स्तर पर होते हुए भी सामाजिक है। मर्द और औरत की शादी सिर्फ दो व्यक्तियों के बीच का सम्बन्ध नहीं है, रिश्ता नहीं है। दो घरों के बीच का रिश्ता है । इसलिए नर नारी के बीच का संघर्ष, निजी या वैयक्तिक होकर सामाजिक है। " स्त्री और पुरुष के बीच सामाजिक संबंधों का संचालन करनेवाले नियम जो एक सेक्स को श्रेष्ठ और दूसरे को उसके अधीन बताते हैं। अपने आप में गलत हैं। इन्हें पूर्ण समानता के नियम द्वारा बदला जाना चाहिए, ताकि न तो किसी एक पक्ष में अधिक शक्ति रहे और न ही किसी एक की अधीनता। " (5). कभी भी नर नारी के बीच शक्ति और अधीनता की बात नहीं होनी चाहिए।

आज नारी मशाल की तरह प्रतिरोध कर रही है, तूफान की तरह अंधविश्वासों व रूढ़ मान्यताओं पर थपेड़ कर रही है, रूढ़िवादी सामाजिक बंधनों से रिहाई चाहती है। वैसे वैसे नारी का शक्ल ही खुद एक विद्रोह का होगा। नारी के पास जो जो खूबियां है, उसे परवरिश करके जीने से उसे कभी मुक्ति या रिहाई नहीं मिल जाएगी। आज उन्हें सियासत में आरक्षण का इंतजाम है। सरकारी नौकरियों में उसकी तादाद बढ़ती जाती है। आज नर के बराबर वह बनती जा रही है।

पहले और आज नर के लिए औरत एक वस्तु है, मस्त चीज़ है, उपभोग की चीज है। आगे इतिहास का पल्ला पलट जाएगा, किसके साथ जीना है ? किसके साथ न जीना है ? किसके साथ चलना है ? अपना सौदा किसके साथ कब करना है ? नारी अपनी जिंदगी की दिशा और दशा, सिमत और हालत का फैसला तय करेगी। इस में नारी कामयाब भी हो जाएगी; क्योंकि आज उसके पास अर्थ है, अर्थ ही जीवन का अर्थ बताएगा।

शादी "आमतौर पर, यह मुख्य रूप से एक संस्थान है जिसमें पारस्परिक संबंध, आमतौर पर यौन, स्वीकार किए जाते हैं या संस्वीकृत होते हैं। " (6) शादी को इसलिए एक सामाजिक संस्था बनाया गया है कि मर्द और औरत को बराबरी से जीने का हक़ मिल जाये, चैन मिल जाये, सुख मिल जाये, बे एक जुट होकर परिवार चलायें, आपस में इज़्ज़त करें, बच्चों का पालन करें, साथ ही साथ अपने

साथ जीने वालों का भी परवरिश करें, समाज के विकास में अपना अपना योगदान दें, नयी पीढ़ी को अपनी मर्जी के मुताबिक़ गढ़ लें। शादी की संस्था की संकल्पना बहुत ही बढ़िया है। क्योंकि कमज़ोर को भी इससे जीवन मिलें। एक संस्था में एक ही सरपंच होता है, एक ही मालिक होता है। मामूली तौर पर मर्द ही संस्था का मुखिया रहा है। लेकिन शादी की संस्था में धीरे धीरे झगड़ा होने लगा है। जदीद दौर में वह उत्तरोत्तर बढ़ भी गया है। पुराने समय में भी रिश्तों के बीच में झगड़ा पैदा हुआ था। लेकिन औरत सब कुछ सबर कर रहती थी। क्योंकि अपने घर की असुविधायें, व आर्थिक परेशानियाँ, पति और पति के घर वालों से झगड़ा करने में उसे भीतर से रोकती है। उन दिनों घर परिवार में सदस्यों की संख्या भी ज़्यादा थी, रूठ कर बच्चों को ले के अपना घर जाना उन दिनों औरतों के लिए सोच के परे की बात थी, खामोश चूल्हे का चेहरा जब जब उभर कर आती है तब तब वह सबर की तह में बैठ जाती है। इसलिए अपने पति के घर से जो जो पीड़ाएँ मिलें औरत चुपचाप सब कुछ सह लेती हैं। इस परेशानी ही पुराने रिश्तों की दृढ़ता थी। लेकिन आज कुछ भी सबर करने की बात औरत न मान लेती है। घर चार सदस्यों का खेमा बन गया है। तलाक़ की बहस शुरू करने के लिए नर नारी के बीच में सिर्फ एक नाचीज़ बात काफी है। आज औरत के पास अर्थ भी है तो शादी की संस्था का सरपंच औरत भी हो सकती है। मगर सच यह है कि दो आदमी एक ही वक़्त किसी भी संस्था के सरपंच नहीं बन सकते। शादी बहुत पुराना संकल्प है, यानी हमारे पुराने घर घरौंदों की तरह है. आज उसमें और भी कई बातें आ जुडी हैं। हर घर में शादी, हर घर में झगड़ा वाली बात आ गयी है। फिलहाल की बात थोड़ी बहुत कर्बनाक व खतरनाक बन गयी है। शादी पहले से भी खर्चीली हो गयी है। दहेज़ - दायजा बहुत बढ़ गया है। मां बाप को ज़िन्दगी भर बैंक में शादी का क़र्ज़ चुकाना पड़ता है। कुछ महीनों के भीतर ही रिश्ते के बीच में दरारें आने लगती हैं। रिश्ता गालियाँ, फिर मारपीट आदि से गुज़र कर साहिल ए तलाक़ तक पहुँच जाता है। फिर मुआवज़ा, नुक्सान भरपाई का मुक़दमा फिर दोनों के लिए आईन्दा ज़खमें भरी ज़िन्दगी. तलाक़ भी आज एक जश्न बन गया है। लोग सर्फ़ ए शादी से भी ज़्यादा खर्च जश्न ए तलाक़ में लगाने लगा है। क्योंकि यह रिश्तों से रिहाई है, बंधन नहीं है; मर्द के बंधन से नारी की मुक्ति है। शास्त्र एवं इल्म के बढ़ते आज औरत को बच्चों की पैदायशी केलिए मर्द की ज़रूरत न होगी, शादी का रवैया भी खत्म हो जाएगा, पुराना चाल चलन भूल जाएगा। आज मेडिकल का ज़माना IUI का है, IVF का है. अपने घर में रहकर, जी कर रिश्तेदारों से ख़ुशी बांढ़ कर नारी अपनी नयी दुनिया में उतरेगी। इस नई दुनिया के लिए ज़्यादा दूरी नहीं है. औरतों ! फ़ासिला कम है। दहेज ख़त्म हो जाएगा। सास ससुर का झगड़ा दूर हो जाएगा। नयी दुनिया में नयी औरत नए सिरे से आएगी, यह मेरी उम्मीद है। जदीद दौर के औरतों के लिए फिर नए सिरे से नयी समस्याएं ज़रूर आएगी; क्योंकि कहीं भी, कभी भी समस्याएं ख़त्म नहीं होती हैं। पुरानी समस्याएं कमज़ोर हो जायेंगी, नयी समस्याएं मज़बूत जायेगी। एक ज़माने में औरत भोग की चीज़ रही थी। आज उन्हें रिहाई का वक़्त है और यौन बच्चा पैदा करने की राह नहीं है, उसके लिये सेक्स ख़ुशी का जश्न बन जाएगा. दिल चाहे, कब भी किसी के भी साथ, अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़. औरत सेक्स का जश्न मना सकती है। वक्त बहुत ही ताकतवर है। करें हम इन्तज़ार आईन्दा दुनिया की, आईन्दा नारी की, हाँ आने वाली दुनिया की, आने वाली नारी की।

ज़रूर ही आगे यह सच निकलेगा की नारी के लिए नर मस्त चीज़ होगा और नर एक दिन नारी के लिए उपभोग की चीज बन जाएगा। सरकार ने नारी के बचाव के लिए बहुत सारे कानून बनाए हैं। आइंदा वह मर्द के लिए खतरा है। उच्च तालीम के लिए जामिया में आने वाली लड़कियों की संख्या लड़कों से ज़्यादा है और वे अपनी तकाजों से खूब परिचित हैं। उनकी मांग बढ़ती जाती है। बिना संघर्ष से सरकार उनकी मांगें मानती है, उनके हक को हासिल करने की मदद में अदालत भी साथ है, ज़रूर ही औरत का भविष्य वर्तमान से भी प्रोज्जवल है।

नारी मुक्ति के संदर्भ में वह कभी आगे कह नहीं पाएगा कि औरत मर्द से कमतर है, कायर है, कमज़ोर है, ताकतहीन है, दुर्बल है, औरों पर निर्भर है।

उधर यह बताया गया है कि नर और नारी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। मगर यह मानना बहुत ही मुश्किल है ; क्योंकि सिक्के के एक हिस्से में जो कुछ लिखा है वह दूसरे हिस्से में नहीं है। दोनों एक ही चीज के हिस्से होने के बावजूद भी दोनों अलग अलग ही हैं। जैसे घर में दीवार बनाते हैं वहां पत्थरों का इस्तेमाल होता है। नर और नारी को एक ही पत्थर के दो पहलू बताएं तो उसे कैसे हम मान सकते ? कभी नहीं मान सकते,; क्योंकि पत्थर का एक हिस्से का चेहरा बावर्चीखाने की ओर है तो दूसरी तरफ का चेहरा नींद ख़ाने की तरफ है। दोनों की मसाईल अलग अलग है। बावर्ची खाने की जो मसाईल है वह नींद ख़ाने की समस्या से बिल्कुल अलग है। नर नारी के बिना सामाजिक जिंदगी आधा अधूरा है। विभिन्न युगो में नारी की हालत जानने के लिए नारी जीवन के अतीत और वर्तमान को समझना चाहिए। वर्तमान और अतीत किसी भी तरह के हो, मगर उनका भविष्य ज़रूर उज्ज्वल हो, प्रोज्जवल हो। नारी का अतीत कैसे भी हो वर्तमान में उसकी सिमत और हालत बहुत अधिक सुधार गई हैं। लेकिन भविष्य आज से कई गुना उज्जवल होगा।

प्राचीन काल में भारतीय समाज में नारी को खूब इज़्ज़त मिल गई थी। उसे आदर का भाव मिल गया था और कहा जाता है कि वह पुरुष के बराबर रही थी। वैदिक काल में घर का मरकज नारी थी। वैदिक साहित्य से पता चलता है कि समाज में नारी को उच्च स्थान प्राप्त हुआ था। नारी देवी के रूप में, मां के रूप में, पुत्री के रूप में, पत्नी के रूप में, सभी रूपों में आदरणीय मानी जाती थी। इतना होने के बावजूद भी दूसरी ओर उसे शैतान, माया, नरक आदि कहकर अपमानित भी किया जाता था।

मध्यकाल में पहुंचकर नारी की हिम्मत और हालत खूब खराब होने लगी और इस युग में उनकी जिंदगी में परिवर्तन लाने में सब बे कामयाब रहे। सामाजिक रूढ़ियों ने औरत को घर की चहारदीवारी में क़ैद कर दिया। औरत तौहम परस्ती की गिरफ्त में पड़ गई। समाज में बाल विवाहों की तादाद बढ़ती गई थी। उसे रोकने वाले कोई नहीं थे।

औरत के लिए तालीम का दरवाजा लगभग बंद सा रहा था और नारी का शोषण बखूबी बढ़ता गया और नारी को कोख से लेकर कबर तक मर्द का गुलाम बनकर जीना में पड़ा। शोषण का दायरा बढ़ता ही रहा। उसे बेसरहद सितम सबर करना पड़ा। किसी ने भी इन्कलाबी आवाज़ नहीं उठाई। तबका ए औरत बेचारा हो गया। इस प्रकार नारी की उम्मीद पर सख्त रोकधाम लगायी गयी। कोई नियम उसके बचाव में ना आए। शासक वर्ग भी नारी का शोषण करते रहे। मुगल राजवंश के समय नारी की हालत बहुत ही दर्दनाक बन गई। बाहर आना भी उसके लिए बहुत मुश्किल था। पर्दा के पीछे रहना, घर के भीतर जीना, झाड़ू लगाना आंगन साफ करना, बावर्ची खाने की चारदीवारी के भीतर खाना पकाते रहना, सबके खाने के बाद खाना खाना,, चादर ओढ़ कर सोना, यह बात सभी दौर में हुआ था।

लेकिन धीरे-धीरे आधुनिक काल की ओर बढ़ती नारी की हालत में बहुत बड़ा बदलाव आने लगा। समाज में नारी जागरण और नारी की आजादी के लिए आधुनिक काल में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, एशियाटिक सोसाइटी और थियोसोफिकल सोसायटी आदि संस्थाओं ने नारी की मसाईलों व समस्याओं को गहराई से पहचान कर उन्हें सुधारने की भरसक कोशिश की। आजादी के बाद औरतों की ताकत बढ़ गई। औरत हाशिए से शाह राह पर आने के लिए संग्राम करने लगी। आजादी के बाद की सरकारों ने कई कानून बनाकर उनकी ज़िंदगी में राहत की बारिश बरसाई है। सति प्रथा को कानून से रोक दिया। सांस्कृतिक, सामाजिक, मसहबी विश्वास रोकना मुश्किल काम है। फिर भी विश्वास अलग है कानून अलग है। आज के जम्हूरियती शासन में कानून विश्वास के भी ऊपर है, इसमें कोई शक नहीं है। क्योंकि यहां तानाशाही शाहों का शासन नहीं है, प्रजातंत्र का, जम्हूरियत का शासन है। कानून से किसी भी अन्ध विश्वास को भी रोक सकते हैं। यहां भरोसे के नाम पर भी शोषण होता रहता है। इक्कीसवीं सदी में औरत अपने घर की चहरदीवारों को तोड़-फोड़ कर आजादी के खुले मैदान पर आयी है। वह मर्दों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नौकरी करने लगी है। सरकारी नौकरी में समान तनख्वाह हासिल करने लगी है।

औरत का अर्थ बढ़ गया है। आज औरत अपने घर का नाम अपना नाम रखने लगी है। कई घर औरत के नाम पर जानने लगे हैं। बस सरकार ने औरत की समाजी इज्ज़त को बढ़ाकर रेशन कार्ड औरत के नाम पर रख दिया है। लेडीस

स्कूल, लेडीस कालेज आदि आज शहर व गावों में खुल गए हैं, शहर में 'लेडीस बस' है। शहर, गांव, गलियों में आज वनिता होटल खुले हैं। सरकारी बसों में रात के वक़्तों में थी मर्द गाड़ीबानों के साथ लेडीस कंडक्टर काम करते दिखाई देता है। हमारे छोटे छोटे शहरों में भी आज यह मामूली मंज़र है । औरतों ने अपनी आमदनी को बहुत कुछ बढ़ा दिया है। पुलिस में आज उसकी भर्ती खूब हुई है। पहले इसकी सोच कोई भी नहीं कर सकते थे। मर्द पुलिस के साथ दिन और रात में भी नारी पुलिस काम करने लगी है। बस, धीरे धीरे वनिता पुलिस स्टेशन या औरत पुलिस थाना भी खोलने लगी है। ' पिंग ' रंग की कार गाड़ी सड़क से होकर गुजर रही है। उसका गाड़ी बान भी औरत है। गाड़ी के भीतर औरतों के बचाव केलिए तैनात औरत अफसर ही होगी, उसमें मर्द की कोई जगह नहीं है। औरत को अगर राह पे या कहीं से कोई मुश्किलों का सामना करना पड़े तो फोन करे तो औरत ने जिस जगह से फ़ोन कर लिया था गूगल नक्शे के सहारे वह 'पिंग रंग' गाड़ी औरत की समस्याओं को हल करने के लिए कुछ ही लम्हों में उधर पहुंच जाएगी। अदालत में आज औरत के लिए लेडी एड्वोकेट की सेवा मुफ़्त रूप में मिल जाती है। सेना में भी उनकी भर्ती आज हो रही है। सरहद पर जंग करने के लिए वह तैयार हो गई है । इस तरह औरत का अपना दायरा आसमान की कुशादगी की तरह फैल रहा है। आज वह सिर्फ डांस क्लास में नहीं जाती, बल्कि 'कराटे' 'जूडो' क्लास में भी जाती है। जो भी हो उनकी ताकत बढ़ती रहती है, उनके सोच विचार में तरक़्क़ी आ रही है। वह अपनी पसंदीदा काम के लिए तैयार हो रही है, लड़कियों के लिए आज लड़कों से ज़्यादा उम्मीद है। आज वह अपने भविष्य को संवारने सजाने के लिए कमजोर नहीं है।

लड़की अपनी पसंदीदा सोच अपने पास रखती है । उसे परवरिश कर अपनी जिंदगी गुजारने के लिए तैयार हो जाती है। केरल के खास इलाकों में हमने देखा ही की परिवार बहुत छोटा होता है। मां बाप के लिए दो बच्चे ज्यादा हैं। लेकिन आजकल 'हम दो हमारे लिए एक' नामक नारा बरकरार रखते हुए अणु परिवार का जीवन केरलीय समाज ने अपनाया है। इसके सिवा हमने यह भी देखा है कि एक ओर जितनी शादी हो रही है, उससे कम या बराबर तलाक भी होती रहती है। पहले तलाक़ मिलने केलिए लंबे वक्त का इंतजार करना पड़ रहा था। आज अपने पति से मुक्ति मिलने के लिए ज़्यादातर छह महीने चाहिए। बस अदालत नारी को अपनी आगे की जिंदगी गुजारने केलिए मर्द से मुआवाजा का इंतजाम भी कर डालता है। नुक्सान भरपाई का मुकदमा जल्द ही जल्द निपटाने के लिए हर ज़िले में 'परिवार न्यायलय' भी हाज़िर है।

जिंदगी के कोई भी क्षेत्र उनके लिए आज अछूता नहीं है। राजनीतिक क्षेत्र में भी वह हौसले के साथ आगे बढ़ रही है । उन्हें सियासी शासन में तैंतीस फीसदी आरक्षण मिला है। लेकिन इतना होने के बावजूद भी हिंदुस्तान के सभी औरतों को इस तरह की सुविधाएँ मिलती है यह मान नहीं सकते। आज भी लाखों करोड़ों औरतें शोषण और उत्पीड़न का शिकार बन रही हैं। नए-नए माहौल के मुताबिक नई नई मसाईल व समस्याएं उनके सामने आ रही हैं। बीवी और पति के बीच में गहरी दरारें बढ़ती जाती है। तनावपूर्ण हाल बदल नहीं गई है। तलाक बढ़ती है और साथ ही साथ पुनर्विवाह भी बढ़ती है. दहेज, जहीज़ या दायजा अब भी बाजार ए शादी में कायम है। आजादी के बाद औरतों की सहूलियत में बहुत बड़ा बदलाव आ गया। सच सच कहूं तो औरत की आजादी मर्द से जाय बढ़ गई है।

बहुत सारे कानून सरकार ने औरतों के लिए बनाए हैं। वे कानून दोनों तरफ तेज दिखनेवाले तलवार की तरह हैं। इसलिए आगे मर्द खतरे में पड़ जाएंगे। साहित्य में नया वाद आ जाएगा।

औरत मर्द का जायदाद नहीं है यह नारीवाद का नया नारा बन जाएगा। यह औरतों के लिए अदालत की देन है, कानूनी देन है खासकर जुवा औरतों के लिए औरत का लिसानी या शाब्दिक माना कितने लोग जानते हैं ? कितनी औरतें जानती हैं ? अरबी फारसी जबानों से रिश्ता रखनेवाले लोग जान पायें। हिंदी और सानवी जबनों के लोग औरत का माना लेते हैं सिर्फ नारी या स्त्री। औरत का दूसरा माना भी है यह नारी या स्त्री कहने पर नहीं मिल जाएगा। जिस के लिए औरत है वह औरत है। औरत का मतलब है योनि। लिंग का अर्थ संस्कृत में निशाना है। इसलिए स्त्रीलिंग का अर्थ है स्त्री का कोई निशाना। इसलिए औरत लफ़्ज़ में पोशीदा माना ज़्यादा है।

सेक्स और जेंडर में फर्क है। सेक्स यह बता देता है कि जन्म से बच्चा मर्द है या औरत ? लेकिन जेंडर सामाजिक शब्द है, यह बता देता है कि मर्द अपनी जिंदगी में जो कुछ करता है अगर औरत अपनी जिंदगी में वह सब करे तो वह जन्म से 'फेमिनिन' होने के बावजूद भी सामाजिक नजर में वह मर्द के बराबर है या 'मास्कुलीन' है। आखिर जन्म से स्त्रीलिंग होने वाली औरत को जेंडर के द्वारा हमने उन्हें 'मास्कुलीन' के बराबर बना दिया है।

पहले नारी का जिंसी शोषण होता था। जिंसी हमला भी हो रहा था। लेकिन इसमें थोड़ा बदलाव आ गया है । पहले उसकी तरफ उंगली उठाने वाले मर्द आज उसकी तरफ नजर भी उठा नहीं पाएंगे, क्योंकि कानून उसके साथ है। जिस जमाने में लोगों ने उसकी तरफ अंगुली उठाई, हमला किया, आज उनकी तरफ नजर उठाना भी गुनाह है, सजा पाने के काबिल है। आगे मर्द औरत से बच नहीं पाएगा; क्योंकि उसके खिलाफ होनेवाली करतूतों के लिए कोई गवाह की जरूरत नहीं है। औरतों पर कानून का, अदालत का जो भरोसा है वह बहुत बढ़ गया है। औरत जो बताएगा वही सच है, अदालत के लिए भी वह सच है। इसलिए आज मर्द खतरे में है और वह आज बेचारा भी है। इसलिए आने वाला औरत का दौर है। मर्द का शोषण होने वाला है और हो जाएगा भी । इसलिए साहित्य का नया वाद आनेवाला है और और नए साहित्यकार भी। उस वाद को पुरुषवाद कहें या मर्दवाद, इसमें कोई एतराज़ नहीं है।

फेमिनिज्म की तरह मर्दों की समस्याओं को लेकर, उनके शोषण और अत्याचार के बारे में साहित्यकार को लिखना पड़ेगा और भविष्य में साहित्यिक दुनिया में एक नया बाद आएगा फेमिनिज्म (Feminism) की तरह Masculism/ M**asculinism** आएगा और Masculism/ M**asculinism** के हिमायती साहित्यकारों को Masculinist पुकारे जाएंगे। यह मेरा उम्मीद है, इंतजार करें। हिंदी साहित्य जगत भी इंतजार में है। सामाजिक पुरुष वर्चस्व या पुरुषार्थ से गिरता हुआ मर्द **egalitarian** को बरकरार रखने में बे कामयाब होकर अपने शोषण के विरोध में लड़ता हुआ M**asculinism** में चित्रित किया जाएगा। वह मंज़र बेहद दर्दनाक भी होगा, क्योंकि गिराव बहुत बहुत ऊपर से है, हज़ारों सालों की ऊंचाई से है। जो भी हो मर्दवाद का दौर दूर नहीं है।

*

सन्दर्भ संकेत

1. शान्ति कुमार स्याल : नारीत्व, पृ. 5.
2. राम अहूजा : भारतीय सामाजिक व्यवस्था, पृ. 89.
3. आशारानी व्होरा : भारतीय नारी : दशा और दिशा, पृ. 7.
4. 4 वी.एन. सिंह : आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण, पृ. 41-42.
5. 5. डा.अमर ज्योति : महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी. दृष्टि, पृ. 11

6ण शादी: विकिपीडिया